



ISSN: 2394-7519

IJSR 2021; 7(5): 343-345

© 2021 IJSR

www.anantajournal.com

Received: 14-07-2021

Accepted: 23-08-2021

रोहित शर्मा

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग

पञ्चाब विश्वविद्यालय,

चण्डीगढ़, भारत

महाभारत में मानवेतर पात्रों का अन्वेषण

रोहित शर्मा

भूमिका - भारतीय वाङ्मय में वेदव्यास द्वारा विरचित “महाभारत” का स्थान महनीय है। महाभारत को वेदव्यास की अमर कृति के रूप में माना जाता है, जिसकी ज्ञान-ज्योति विश्वपटल पर सर्वदा देदीप्यमान रहेगी। इस ग्रन्थ की कथा कुरुक्षेत्र में दो चन्द्रवंशीय परिवारों कौरवों और पाण्डवों के मध्य हुए विश्वविष्यात युद्ध का वृत्तान्त है। सभी विषयों यथा धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, नैतिक इत्यादि के समावेश के कारण विशलता को धारण करता हुआ यह ग्रन्थ स्वयं में एक विश्वकोश है। यथा महाभारत में द्रष्टव्य है –

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे भरतर्षभा।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् द्वचित्॥१

अर्थात् विश्व के समस्त विषय पुरुषार्थ-चतुष्टय के अन्तर्गत समाहित हैं। पुरुषार्थ-चतुष्टय का यदि कोई विषय महाभारत में नहीं है तो अन्यत्र कहीं भी नहीं है।

ग्रन्थ परिचय - ग्रन्थ का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर ज्ञातव्य है कि इतने विशाल महाकाव्य के संकलन में कई वर्ष अपेक्षित रहे होंगे। किसी नियत कालखण्ड के अन्तर्गत इस कार्य को सम्पादित करना किसी एक व्यक्ति के लिए असम्भव है। वस्तुतः ग्रन्थ की मूलकथा संक्षिप्त ही थी, जो कालक्रमानुसार परिवर्धित होती हुई अन्त में शतसाहस्री बन गई। महाभारत का विकास जय, भारत और महाभारत इन तीन रूपों में हुआ है।

जय - इस ग्रन्थ की रचना कौरवों पर पाण्डवों की विजयवृत्त को आधार बनाकर की गई थी, इसलिए इसे “जय” नामक संज्ञा से अभिहित किया गया। इस ग्रन्थ को वेदव्यास द्वारा अपने शिष्य वैशम्पायन को सुनाया था, जिसमें 8800 श्लोक थे।

अष्टौ श्लोकसहस्राणि अष्टौ श्लोकशतानि च।
अहं वेद्मि शुको वेत्ति सञ्ज्यो वेत्ति वा न वा॥ २

भारत - द्वितीय अवस्था में इस ग्रन्थ का विस्तार “भारत” के रूप में विकसित हुआ, जिसमें 24000 श्लोक थे। आख्यान रहित इस ग्रन्थ का प्रवचन वैशम्पायन द्वारा अपने गुरु की आज्ञा से जनमेजय के नाग यज्ञ के सुअवसर पर किया गया था। यथा-

Corresponding Author:

रोहित शर्मा

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग

पञ्चाब विश्वविद्यालय,

चण्डीगढ़, भारत

चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भरतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद्वारतं प्रोच्यते बुधैः॥ ३

महाभारत – अन्तिम अवस्था में 18 पर्वों से युक्त तथा एक लाख से भी अधिक क्षोकों का “महाभारत” प्रस्तुत हुआ, जो वर्तमान में उपलब्ध होता है। भारत को महाभारत में परिणित करने का श्रेय नैमिषारण्य नामक स्थान में होने वाले यज्ञ को जाता है, जिसे शौनक कृष्णि ने अनुष्ठित किया था। इस ग्रन्थ का उपदेश सौति कृष्णि द्वारा इसी यज्ञ में किया गया था। उन्होंने इस ग्रन्थ को वैशम्पायन से सुना था। मानवेतर शब्द का तात्पर्य – मानवेतर शब्द मानव+इतर दो शब्दों के मेल से निर्मित होता है, जिसका अर्थ है मानव से भिन्न। क्योंकि यह विषय मानवेतर पात्रों के अन्वेषण से सम्बन्धित है तो इस विषय के अन्तर्गत महाभारत में आने वाले केवल मानव पात्रों को छोड़कर अन्य सभी पात्र जिनका मूल कथानक में संवाद प्रचलित है, को ग्रहण किया जाएगा। महाभारत एक ऐसा महाकाव्य है जो मानवीय पात्रों के साथ-साथ मानवेतर पात्रों को लेकर आगे बढ़ता है। ऐसे अमानवीय पात्रों की महाभारत में भरमार है। विभाजन की दृष्टि से इन मानवेतर पात्रों को दिव्य, दिव्यजन्मा मनुज, राक्षस, गन्धर्व व यक्ष, पशु-पक्षी व मानवेतर अन्य पात्र की श्रेणी में रखा जा सकता है। दिव्यकोटि के पात्र - महाभारत में दिव्यकोटि के अन्तर्गत आने वाले पात्र इन्द्र, यम, सूर्य, बृहस्पति, कच, शुक्र, मारुत्, अश्विनी कुमार, अग्नि, उर्वशी, मेनका, वर्गा इत्यादि हैं। इनमें देवताओं के राजा इन्द्र का कवि द्वारा महाभारत में किया गया वर्णन इस प्रकार है -

वज्रस्य भर्ता भुवनस्य गोसा वृत्रस्य हन्ता नमुचेर्निहन्ता।
कृष्णो वसानो वसने महात्मा सत्यानृते यो विविनक्ति
लोके॥ ४

अर्थात् वज्रधारी जगत् की रक्षा करने वाला, नमुचि एवं वृत्रासुर को मारने वाला, दो काले कपड़े पहनने वाला, महात्मा जो लोगों को सत्यासत्य का ज्ञान कराए वह इन्द्र है। दिव्यजन्माकोटि पात्र - इस श्रेणी में आने वाले पात्र द्रौपदी, धृष्टद्युम्न, द्रोण, कृपाचार्य, कर्ण, पाण्डव इत्यादि हैं। इन पात्रों की उत्पत्ति या जन्म अत्यन्त असाधारण है। महाभारत में द्रौपदी और धृष्टद्युम्न का जन्म एक यज्ञ वेदी से होता है यथा -

एवमुक्ते तु याजेन हुते हविषि संस्कृते।
उत्तस्थौ पावकात् तस्मात् कुमारो देवसंनिभः॥ ५

अर्थात् द्रुपद् की पुत्र आकाङ्क्षा के प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए जैसे ही पुरोहित यज द्वारा मन्त्रोच्चारण सहित यज्ञ में हवि का आधान किया गया, उसी समय यज्ञाग्नि से एक कुमार उत्पन्न हुआ जो बाद में धृष्टद्युम्न नाम से प्रख्यात हुआ। तदनन्तर इसी मानवेतर पात्रों के प्रसङ्ग में उसी यज्ञ वेदी से द्रौपदी का अवतरण होता है।

कुमारी चापि पाञ्चाली वेदीमध्यात्समुत्थिता।
सुभगा दर्शनीयाङ्गी वेदिमध्या मनोरमा॥ ६

अर्थात् धृष्टद्युम्न के पश्चात् वेदी के मध्य से पाञ्चाली, सौभाग्यवती, सुन्दर अङ्गों वाली एक कुमारी प्रकट होती है जो बाद में द्रौपदी के नाम से प्रसिद्ध होती है।

राक्षसकोटि पात्र - इस कोटि में आने वाले हिंडिम्ब, वकासुर, वृषपर्वा, मय, पुलोमा, बर्बरीक, घटोत्कच, हिंडिम्बा, जरा इत्यादि का वर्णन महाभारत में यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होता है। ऐसे पात्र लगभग स्थूल देह, दीर्घकाय, भयङ्कर, विकराल, पशुवत्, अनैतिक एवं बड़े मायावी होते थे। पाण्डवों के वनवास के समय आए विकराल, भयङ्कर हिंडिम्ब का वर्णन इस प्रकार है।

कूरो मानुषमांसादो महावीर्यो महाबलः।
विरूपरूपः पिङ्गाक्षः करालो घोरदर्शनः।
पिण्ठितेष्युः क्षुधार्तस्तानपश्यत यदृच्छ्या॥ ७

अर्थात् वह राक्षस हिंडिम्ब निर्देशी, नरभक्षी, महाबलशाली, भयङ्कर, पिङ्गल नेत्रों वाला, अत्यन्त डरावना, मायावी एवं हमेशा भूख से व्याकुल रहने वाला वन में पाण्डवों को सुसावस्था में देखता है।

गन्धर्वकोटि पात्र - इस श्रेणी के अन्तर्गत अङ्गारपर्ण, चित्रांगद, कुम्भीनसी इत्यादि पात्र महाभारत में द्रष्टव्य हैं। इस श्रेणी के पात्र गायन, वाद्य, नृत्य, ललित कलाओं में दक्ष एवं शक्तिशाली होते थे। द्रौपदी स्वयंवर के लिए पाञ्चाल नगर जाते समय पाण्डवों की भेंट गङ्गा में गन्धर्वस्त्रियों के साथ विहार करते हुए अङ्गारपर्ण नामक गन्धर्व से होती है, जो स्वयं को कुबेर का मित्र बताता है तथा तटवर्ती वन को अपना अधिकार क्षेत्र कहकर अतिक्रोधपूर्ण वाणी से पाण्डवों को गङ्गा में प्रवेश करने से रोकता है।

अङ्गारपर्ण गन्धर्व वित्त मां स्वबलाश्रयात्।
अहं ही मानी चेष्टुश्च कुबेरस्य प्रियः सखा॥ ८
अङ्गारपर्णमिति च ख्यातं वनमिदं मम।
अनु गङ्गां च वाकां च मित्रं यत्र वसाम्यहम्॥ ९

पशु-पक्षीकोटि पात्र - इसमें देवशुनी सरमा, गरुड़, जरिता, नन्दिनी, नकुल, जम्बूक, व्याघ्र इत्यादि आते हैं। वस्तुतः यह पात्र पशु-पक्षी ही हैं, परन्तु कवि के उच्च व्यावहारिक कौशल के कारण ये पात्र मानववत् संवाद करते हुए महाभारत में स्पष्टतः देखे जा सकते हैं। जनमेजय के यज्ञ देवशुनी सरमा के श्वान पुत्र को ताड़े जाने पर उसे क्रोध आ जाता है तथा वह मनुष्य वाणी का प्रयोग करते हुए जनमेजय को अलक्षित भय होने का श्राप दे देती है।

स तया कुद्धया तत्रोक्तः। अयं मे पुत्रो न किञ्चिदपराध्यति।
किमर्थमभिहत इति। यस्माच्चायमभिहतोऽनपकारी
तस्माददृष्टं त्वां भयमागमिष्यतीति॥ 10

मानवेतर अन्य पात्र - इन पात्रों में प्रकृति सम्बन्धी पात्र यथा नदी, वृक्ष, नाग, सर्प, इत्यादि आते हैं। वस्तुतः नदी, वृक्ष सभी निर्जीव पात्र हैं परन्तु कवि की उच्च काव्य प्रतिभा से गड़गा, कालिन्दी, रौहिण वट वृक्ष आदि सभी सजीववत् व्यवहार करने लगते हैं। राजा प्रतीप के तप से प्रभावित होकर रूपगुणयुक्त अति लुभावनी, लक्ष्मी सदृश आकृति वाली गड़गा जल से निकलकर बाहर आ गई अर्थात् गड़गा साक्षात् रूप धारण कर लेती है।

तस्य रूपगुणोपेता गड़गा श्रीरिव रूपिणी।
उत्तीर्य सलिलात्तस्माल्लोभनीयतमाकृतिः॥ 11

इस प्रकार यह महाकाव्य विभिन्न मानवीय, अमानवीय प्राकृतिक पात्रों के साथ कथानक में अद्भुतता एवं रोचकता बनाए हुए जनसामान्य को आनन्दित करता हुआ उनके हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ता है।

निष्कर्ष – विभिन्न कालों की संस्कृतिओं को धारण करने से, लगभग सभी पक्षों, विषयों को निहित करने एवं अत्यधिक विशालकाय ग्रन्थ होने के कारण इस विश्वख्यात महाकाव्य का वर्तमानकालिक दृष्टि से प्रत्येक अंश शोधमूलक है। महाभारत के विभिन्न पक्षों पर अनेक शोध हो चुके हैं तो कुछ अग्रसर हैं। पात्रों के विषय में यदि विश्लेषण किया जाए तो महाभारत के बहुत से पात्रों पर व्यक्तिगत रूप से शोध हुए हैं। मानवेतर पात्रों के सन्दर्भ में शोध अत्यल्प और अतिसंक्षिप्त हुए हैं, अतः इस शोध-प्रपत्र में कुछ प्रमुख मानवेतर पात्रों का संक्षिप्त विवेचन करने का प्रयास अभिप्रेत है।

संदर्भ

1. महाभारत – 1.62.53
2. वही – 1.1.81
3. वही – 1.1.102
4. वही – 1.3.152
5. वही – 1.155.37

6. वही – 1.155.41
7. वही – 1.139.2
8. वही – 1.158.12
9. वही – 1.158.13
10. वही – 1.3.8
11. वही – 1.92.2